१. समय की शिला पर

– शंभूनाथ सिंह

संभाषणीय

'समय बड़ा बलवान' इस विषय पर चर्चा कीजिए :–

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

● विद्यार्थियों को चर्चा के लिए मुद्दे दें । एक-एक मुद्दा लेकर विद्यार्थियों से चर्चा करें । ● आवश्यक सुवचन, लोकोक्तियाँ, मुहावरे आदि का प्रयोग करते हुए अपने विचार प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित करें ।

समय की शिला पर मधुर चित्र कितने
किसी ने बनाए, किसी ने मिटाए ।।

किसी ने लिखी आँसुओं से कहानी
किसी ने पढ़ा किंतु दो बूँद पानी
इसी में गए बीत दिन जिंदगी के
गई घुल जवानी, गई मिट निशानी ।
विकल सिंधु साध के मेघ कितने
धरा ने उठाए, गगन ने गिराए ।।

शलभ ने शिखा को सदा ध्येय माना
किसी को लगा यह मरण का बहाना
शलभ जल न पाया, शलभ मिट न पाया
तिमिर में उसे पर मिला क्या ठिकाना ?
प्रेम-पंथ पर प्राण के दीप कितने
मिलन ने जलाए, बिरह ने बुझाए ।।

भटकती हुई राह में वंचना की
रुकी श्रांत हो जब लहर चेतना की
तिमिर आवरण ज्योति का वर बना तब
कि टूटी तभी शृंखला साधना की ।
नयन-प्राण में रूप के स्वप्न कितने
निशा ने जगाए, उषा ने सुलाए ।।

सुरभि की अनिल पंख पर मौन भाषा
उड़ी वंदना की जगी सुप्त आशा
तुहिन बिंदु बनकर बिखर पर गए स्वर
नहीं बुझ सकी अर्चना की पिपासा ।
किसी के चरण पर वरण फूल कितने
लता ने चढ़ाए, लहर ने बहाए ।।

—०—

परिचय

जन्म : १७ जून १९१६ रावतपार, देवरिया (उ.प्र.)
मृत्यु : ३ सितंबर १९९१
परिचय : शंभूनाथ सिंह जी नवगीत परंपरा के शीर्ष प्रवर्तक, प्रगतिशील कवि के रूप में जाने जाते हैं । बहुमुखी प्रतिभा के धनी आप कहानीकार, समीक्षक, नाटककार और पुरातत्वविद भी थे ।
प्रमुख कृतियाँ : रूप रश्मि, छायालोक (पारंपरिक गीत संग्रह) समय की शिला, जहाँ दर्द नीला है, वक्त की मीनार पर (नवगीत संग्रह) उदयाचल, खंडित सेतु (नई कविता संग्रह), रातरानी, विद्रोह आदि (कहानी संग्रह), धरती और आकाश, अकेला शहर (नाटक)।

पद्य संबंधी

नवगीत : यह गीत का ही विकसित रूप है । इसमें परंपरागत भावबोध से अलग नवीन भावबोध तथा शिल्प प्रस्तुत किया जाता है । कवि आवश्यकतानुसार नए प्रतीकों के माध्यम से काव्य प्रस्तुत करता है ।

प्रस्तुत नवगीत में कवि ने लिखने-पढ़ने में अंतर, अंधकार के प्रकाश में परिवर्तन, आँखों में तैरते सपनों की स्थिति, प्रार्थना की प्यास आदि मनोभावों को बड़े ही मार्मिक ढंग से अभिव्यक्त किया है ।

शब्द संसार

विकल (वि.सं.) = व्याकुल
वंचना (स्त्री.सं.) = धोखेबाजी
शलभ (पुं.सं.) = पतंगा
पिपासा (स्त्री.सं.) = तृषा, प्यास

श्रवणीय

यू ट्यूब/अंतरजाल से सुमित्रानंदन पंत की कोई कविता सुनिए और उसका संक्षेप में आशय बताइए ।

आसपास

'संचार माध्यम द्वारा समय का पालन अचूकता से किया जाता है' इसपर चर्चा कीजिए ।

लेखनीय

आजादी की प्राप्ति में 'स्वतंत्रता सेनानियों के योगदान' पर निबंध लिखिए ।

पठनीय

'व्यक्तित्व विकास में समय का व्यवस्थापन' विषय पर समाचारपत्र/लेख पढ़िए तथा उसपर टिप्पणी बनाइए ।

कल्पना पल्लवन

'विश्वबंधुता आज की माँग', इस विषय पर अपना मत लिखिए ।

पाठ के आँगन में

(१) सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :–

(क) आकृति पूर्ण कीजिए :

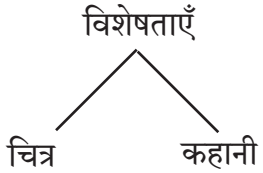

पाठ से आगे

'नियमितता से सफलता की ओर', इसपर अपने विचार स्पष्ट कीजिए ।

(ख) संगीत, लय निर्माण करने वाली शब्द जोड़ियाँ लिखिए ।

(ग) 'नयन – प्राण में रूप के स्वप्न कितने निशा ने जगाए,
उषा ने सुलाए' इन पंक्तियों से अभिप्रेत अर्थ लिखिए ।

(२) कविता से प्राप्त संदेश लिखिए ।

kavitakosh.org/kk/शंभुनाथ_सिंह

रचना बोध

.....
.....
.....